९

उवक्कमाणुयोगद्दारं

सयलिंदविंदवंदियमहिणंदियभव्व-पउमवणसंडं।

अहिणंदणजिणणाहं णमिऊण उवक्कमं वोच्छं ।।१।।

समस्त इंद्रसमूहोंसे वन्दित और भव्य जीवों रूपी कमल-वनखण्डको अभिनन्दित करनेवाले अभिनन्दन जिनेन्द्रको नमस्कार करके उपक्रम अनुयोगद्वारका कथन करते हैं।

एत्थ उवक्कमस्स ताव णिक्खेवो उच्चदे। तं जहा --णामउवक्कमो, ट्ठवणउवक्कमो, दव्वउवक्कमो, खेत्तउवक्कमो, कालउवक्कमो, भावउवक्कमो चेदि छव्विहो उवक्कमो। णाम-ट्ठवण गदं। दव्वउवक्कमो दुविहो आगम-णोआगमदव्वोवक्कमभेएण। उवक्कमअणुयोगद्दार (प्रत्योरुभयोरेव 'उवक्कमणुयोगद्दार' इति पाठः।) जाणओ अणुवजुत्तो आगमदव्वोवक्कमो। णोआगमदव्वोवक्कमो तिविहो जाणुगसरीर-भविय-तव्वदिरित्तभेएण। जाणुग-भवियं गदं। तव्वतिरित्तदव्वोवक्कमो दुविहो -- कम्मोवक्कमो णोकम्मोवक्कमो चेदि। कम्मोवक्कमो अट्ठविहो। णोकम्मोवक्कमो तिविहो सचित्त-अचित्त-मिस्सभेएण (से किं तं उवक्कमे`? छव्विहे पण्णत्ते। तं जहा -- णामोवक्कमे ठवणोवक्कमे दव्वोवक्कमे खेत्तोवक्कमे कालोवक्कमे भावोवक्कमे नाम-ठवणाओ गयाओ। से किं तं दव्वोवक्कमे? दव्वोवक्कमे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा -- आगमओ नोआगमओ अ। जाव जाणगसरीर-भवियसरीर-वइरित्ते दव्वोवक्कमे तिविहे पण्णत्ते। तं जहा -- सचित्ते अचित्ते मीसए। अणु. ६०)। खेत्तोवक्कमो (से किं तं खेत्तोवक्कमे? जण्ण हल-कुलिआईहिं खेत्ताइं उवक्कमिजंति, से तं खेत्तोवक्कमे। अणु. ६७) जहा उड्ढलोगो उवक्कंतो, गामो उवक्कंतो, णयरमुवक्कंतं इच्चेवमादी। कालोवक्कमो जहा वसंतो उवक्कंतो, हेमंतो उवक्कंतो इच्चेवमादी। भावोवक्कमो दुविहो आगम-णोआगमभावोवक्कमभेएण। उवक्कमअणुयोगद्दारजाणगो उवजुत्तो आगमभावोवक्कमो -- जहा पाहुडमुवक्कंतं, पुव्वं वत्थू वा उवक्कंतं। ओदइयादिभावोवक्कमो णोआगमभावोवक्कमो णाम। एत्थ एदेसु उवक्कमेसु केण पयदं? कम्मोवक्कमेण पयदं। जो सो कम्मोवक्कमो सो चउव्विहो -- बंधणउवक्कमो उदीरणउवक्कमो उवसामणउवक्कमो विपरिणामउवक्कमो चेदि। पक्कम-उवक्कमाणं को भेदो?

पयडि-ट्ठिदि-अणुभागेसु ढुक्कमाण(काप्रतौ 'दुःकमण' इति पाठः।)पदेसग्गपरूवणं (काप्रतौ 'परूवण-', ताप्रतौ 'परूवणा (णं)' इति पाठः।)पक्कमो कुणइ, उवक्कमो पुण बंधबिदियसमयप्पहुडि संतसरूवेण ट्ठिदिकम्मपोग्गलाणं वावारं परूवेदि। तेण अत्थि विसेसो। जो सो बंधणउवक्कमो सो चउव्विहो -- पयडिबंधणउवक्कमो, ठिदिबंधणउवक्कमो, अणुभागबंधणउवक्कमो पदेसबंधणउवक्कमो चेदि। जीवपदेसेहि खीर-णीरं व अण्णोण्णाणुगयपयडीणं बंधकम्मपरूवणं पयडिबंधणउवक्कमो णाम। तो संतपयडीण(ताप्रतौ '(तो) संतपयडीण' इति पाठः।)मेगसमयादि जाव सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ त्ति कम्मभावेणावट्ठाणकालपरूवणं ट्ठिदिबंधणउवक्कमो णाम। तासिं चेव संतपयडीणमणुभागस्स जीवेण सह एयत्तं गयस्स फद्दय-वग्ग-वग्गणा-ट्ठाणाविभागपडिच्छेदादिपरूवणा अणुभागबंधणउवक्कमो णाम। तासिं चेव पयडीणं खविद-गुणिदकम्मंसिय-तग्घोलमाणे अस्सिदूण संचिदउक्कस्साणुवक्कस्स-पदेसपरूवणा पदेसबंधणउवक्कमो णाम। एत्थ एदेसिं चदुण्णमुवक्कमाणं जहा संतकम्मपयडिपाहुडे परूविदं तहा परूवेयव्वं। जहा महाबंधे परूविदं तहा परूवणा एत्थ किण्ण कीरदे? ण, तस्स पढमसमयबंधम्मि चेव वावारादो। ण च तमेत्थ वोत्तुं जुत्तं, पुणरुत्तदोसप्पसंगादो। एवं बंधणउवक्कमो समत्तो।

यहाँ पहले उपक्रमका निक्षेप कहते हैं। वह इस प्रकार है -- नामउपक्रम, स्थापना उपक्रम, द्रव्यउपक्रम, क्षेत्रउपक्रम, कालउपक्रम और भावउपक्रम, इस तरह उपक्रम छह प्रकारका है। नाम व स्थापना उपक्रम अवगत हैं। द्रव्यउपक्रम आगम और नोआगम द्रव्यउपक्रमके भेदसे दो प्रकारका है। उपक्रमअनुयोगद्वारका ज्ञायक, उपयोगरहित जीव आगमद्रव्योपक्रम कहलाता है। नोआगमद्रव्योपक्रम ज्ञायकशरीर, भावी और तद्व्यतिरिक्तके भेदसे तीन प्रकारका है। इनमें ज्ञायकशरीर और भावी नोआगमद्रव्योपक्रम अवगत हैं। तद्व्यतिरिक्त द्रव्योपक्रम दो प्रकारका है -- कर्मोपक्रम और नोकर्मोपक्रम। कर्मोपक्रम आठ प्रकारका है। नोकर्मोपक्रम सचित्त, अचित्त और मिश्रके भेदसे तीन प्रकारका है।

क्षेत्र-उपक्रम -- जैसे ऊर्ध्वलोक उपक्रान्त हुआ, ग्राम उपक्रान्त हुआ व नगर उपक्रांत हुआ इत्यादि। कालउपक्रम - जैसे -- वसन्त उपक्रान्त हुआ व हेमन्त उपक्रान्त हुआ इत्यादि। भाव-उपक्रम आगम व नोआगम भाव-उपक्रमके भेदसे दो प्रकारका है।

उपक्रम अनुयोगद्वार का ज्ञायक उपयोगयुक्त जीव आगमभाव-उपक्रम कहलाता है। जैसे -- प्राभृत उपक्रान्त हुआ, पूर्व उपक्रांत हुआ अथवा वस्तु उपक्रान्त हुई। औदयिक आदि भावोंके उपक्रमको नोआगमभावोपक्रम कहते हैं।

शंका -- इन उपक्रमोंमें यहाँ कौनसा उपक्रम प्रकृत है?

समाधान -- यहाँ कर्मोपक्रम प्रकृत है।

जो वह कर्मोपक्रम है वह चार प्रकारका है -- बन्धन उपक्रम, उदीरणा उपक्रम, उपशामना उपक्रम और विपरिणाम उपक्रम।

शंका -- प्रक्रम और उपक्रममें क्या भेद है?

समाधान -- प्रक्रम अनुयोगद्वार प्रकृति, स्थिति और अनुभागमें आनेवाले प्रदेशाग्रकी प्ररूपणा करता है; परन्तु उपक्रम अनुयोगद्वार बन्धके द्वितीय समय से लेकर सत्त्वस्वरूपसे स्थित कर्म-पुद्गलोंके व्यापारकी प्ररूपणा करता है। इसलिए उन दोनोंमें विशेषता है।

जो वह बन्धन-उपक्रम है वह चार प्रकारका है -- प्रकृतिबन्धन-उपक्रम, स्थितिबन्झ-उपक्रम, अनुभागबन्ध-उपक्रम और प्रदेशबन्धन उपक्रम। दूधके साथ पानीके समान जीवप्रदेशोंके साथ परस्परमें अनुगत (एकरूपता को प्राप्त) प्रकृतियोंके बन्धकी प्ररूपणा करनेको प्रकृतिबंधन उपक्रम कहते हैं। अनन्तर उन सत्त्वरूप प्रकृतियोंके एक समयसे लेकर सत्तर कोडाकोडी सागरोपम काल तक कर्मस्वरूपसे रहनेके कालकी प्ररूपणाको स्थितिबन्धन-उपक्रम कहते हैं। उन्हीं सत्त्वप्रकृतियोंके जीवके साथ एकताको प्राप्त हुए अनुभाग सम्बन्धी स्पर्धक, वर्ग, वर्गणा, स्थान और अविभागप्रतिच्छेद आदिकी प्ररूपणाका नाम अनुभागबन्धन-उपक्रम है। उन्हीं प्रकृतियोंके क्षपितकर्मांशिक, गुणितकर्मांशिक, क्षपितघोलमान और गुणितघोलमान जीवोंका आश्रय करके संचयको प्राप्त हुए उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट प्रदेशकी प्ररूपणाको प्रदेशबन्धन-उपक्रम कहा जाता है। इन चार उपक्रमोंकी प्ररूपणा जैसे सत्कर्मप्रकृतिप्राभृतमें की गयी है, उसी प्रकार यहाँ भी करनी चाहिए।

शंका -- जैसी महाबन्धमें प्ररूपणा की गयी है वैसी प्ररूपणा यहाँ क्यों नहीं की जाती है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, उसका व्यापार प्रथम समय सम्बन्धी बन्धमें ही है। और उसका यहाँ कथन करना योग्य नहीं है, क्योंकि, वैसा होने पर पुनरुक्त दोषका प्रसंग आता है। इस प्रकार बन्धन-उपक्रम समाप्त हुआ।

उदीरणा चउव्विहा -- पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसउदीरणा चेदि। तत्थ पयडिउदीरणा दुविहा -- मूलपयडिउदीरणा उत्तरपयडिउदीरणा चेदि। तत्थ मूलपयडिउदीरणं वत्तइस्सामो। तं जहा -- का उदीरणा णाम? अपक्कपाचणमुदीरणा। आवलियाए बाहिरट्ठिदिमादिं कादूण उवरिमाणं ठिदीणं बंधावलियवदिक्कंतपदेसग्गमसंखेज्जलोगपडिभागेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपडिभागेण वा ओकड्डिदूण उदयावलियाए देदि (का प्रतौ 'उदयावलियारा जादि' इति पाठः।) सा उदीरणा (तत्थ उदओ णाम कम्माणं जहाकालजणिदो फलविवागो कम्मोदयो उदयो त्ति भणिदं होइ। उदीरणा पुण अपरित्तकालाणं चेव कम्माणमुवायविसेसेण परिपाचणं, अपक्वपरिपाचनमुदीरणेति वचनात्। वुत्तं च -- कालेण उवायेण य पच्चंति जहा वणप्फइफलाइं। तह कालेण तवेण य पच्चंति कयायिं कमा(म्मा)यिं।। जयध. अ. प. ७४८) जं करणेणोकड्डिय उदये दिज्जइ उदीरणा एसा। पगइ-ट्ठिइ-अणुभाग-प्पएसमूलुत्तरविभागा।। क. प्र. ४,१) तत्र यत्परमाण्वात्मकं दलिककरणेन योगसंज्ञकेन वीर्यविशेषेण कषायसहितेन असहितेन वा उदयावलिकाबहिर्वर्तिनीभ्यः स्थितीभ्योऽपकृष्य उदये दीयते उदयावलिकायां प्रक्षिप्यते एषा उदीरणा। (मलय.)। मूलपयडिउदीरणा दुविहा -- एगेगपयडिउदीरणा पयडिट्ठाणउदीरणा चेदि।

उदीरणा चार प्रकारकी है -- प्रकृतिउदीरणा, स्थितिउदीरणा, अनुभागउदीरणा, प्रदेशउदीरणा। उनमें प्रकृतिउदीरणा मूलप्रकृतिउदीरणा और उत्तरप्रकृतिउदीरणाके भेदसे दो प्रकार की है। उनमें मूलप्रकृतिउदीरणाका कथन करते हैं। वह इस प्रकार है --

शंका -- उदीरणा किसे कहते है?

समाधान -- नहीं पके हुए कर्मों के पकाने का नाम उदीरणा है। आवली के बाहरकी स्थितिको लेकर आगेकी स्थितियोंके बन्धावली अतिक्रान्च प्रदेशाग्र को असंख्यात लोक प्रतिभाग से अथवा पल्योपम के असंखातवें भागरूप प्रतिभाग से अपकर्षण करके उदयावलीमें देना, यह उदीरणा कहलाती है।

मूलप्रकृति उदीरणा दो प्रकारकी है -- एक-एकप्रकृतिउदीरणा और प्रकृतिस्थानउदीरणा।

एत्थ ताव एगेगपयडिउदीरणाए सामित्तं भणिस्सामो। णाणावरणीय-दंसणावरणीय-अंतराइयाणं मिच्छाइट्ठिमादिं कादूण जाण खीणकसाओ त्ति ताव एदे उदीरया। णवरि खीणकसायद्धाए समयाहियावलिसेसाए एदासिं तिण्णं पयडीणं उदीरणा वोच्छिण्णा। मोहणीयस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइओ त्ति उदीरया । (घाईणं छउमत्था उदीरया रागिणो य मोहस्स)। क. प्र. ४,३. घातिप्रकृतीनां ज्ञानावरण-दर्शनावरणान्तरायरूपाणां सर्वेऽपि छद्मस्थाः क्षीणमोहपर्यवसाना उदीरकाः। मोहनीयस्य तु रागिणः सरागाः सूक्ष्मसाम्परायपर्यवसाना उदीरकाः। (मलय टीका)। णवरि चडमाणसुहुमसांपराइयद्धाए समयाहियावलियसेसाए उदीरणा वोच्छिण्णा। वेयणीयस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति उदीरया। णवरि पमत्तसंजदस्स अप्पमत्ताहिमुहस्स चरिमसमए उदीरणा वोच्छिण्णा। आउअस्स मिच्छाइट्ठी मरणकाले चरमावलियं मोत्तूण सेससव्वकाले उदीरओ। गुणं पुण पडिवज्जमाणो जाव चरिमसमयं ताव उदीरओ। एवं वत्तव्वं जाव पमत्तसंजदो त्ति। उवरि उदीरणा आउअस्स णत्थि। कुदो? साभावियादो। णामा-गोदाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगकेवलित्ति उदीरणा (तइयाऊण पमत्ता जोगंता उत्ति दोण्हं च।। क. प्र. ४,४. तृतीयस्य वेदनीयस्य आयुषश्च प्रमत्ताप्रमत्तगुणस्थानकपर्यन्ताः सर्वेऽप्युदीरकाः। केवलमायुषः पर्यन्तावलिकायां नोदीरका भवन्ति तथा द्वयोर्नाम-गोत्रयोर्योग्यन्ताः सयोगकेवलिपर्यवसानाः सर्वेऽप्युदीरकाः। (मलय.टीका))। णवरि सजोगिकेवलिचरिमसमए उदीरणा वोच्छिण्णा। एवं सामित्तं समत्तं।

यहाँ पहले एक-एकप्रकृतिउदीरणाके स्वामित्वका कथन करते हैं -- ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अन्तराय इन तीन कर्मोंके मिथ्यादृष्टिसे लेकर क्षीणकषाय पर्यंत, ये जीव उदीरक हैं। विशेष इतना है कि क्षीणकषायके कालमें एक समय अधिक आवलीके शेष रहनेपर इन तीनों प्रकृतियोंकी उदीरणा व्युच्छिन्न हो जाती है। मोहनीय कर्मके मिथ्यादृष्टिसे लेकर सूक्ष्मसाम्परायिक तक उदीरक हैं। विशेष इतना है कि चढ़ते समय सूक्ष्मसाम्परायिकके कालमें एक समय अधिक आवलीके शेष रहने पर उदीरणा व्युच्छिन्न हो जाती है। वेदनीय कर्मके मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक उदीरक हैं। विशेष इतना है कि अप्रमत्त गुणस्थानके अभिमुख हुए प्रमत्तसंयत जीवके अन्तिम समयमें उसकी उदीरणा व्युच्छिन्न हो जाती है। मरणकालमें अन्तिम आवलीको छोड़कर शेष सब कालमें आयुका उदीरक मिथ्यादृष्टि जीव होता है। परन्तु अन्य गुणस्थानको प्राप्त होनेवाला जीव उस गुणस्थानके अन्तिम समय तक उदीरक होता है। इस प्रकार प्रमत्तसंयत तक कहना चाहिए, क्योंकि, उसके आगे आयुकी उदीरणा नहीं है। इसका कारण स्वभाव है। नाम व गोत्र कर्मकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवली

तक है। विशेष इतना है कि सयोगकेवलीके अन्तिम समयमें उदीरणा व्युच्छिन्न हो जाती है। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ।

एयजीवेण कालो -- वेयणीय-मोहणीयाणमुदीरओ अणादिओ अपज्जवसिदो, अणादिओ सपज्जवसिदो, सादिओ सपज्जवसिदो वा। जो सो सादिओ सपज्जवसिदो सो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उदीरेदि, अपमत्त-उवसंतकसायाणं हेट्ठा पदिदूण सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय पुणो अप्पमत्तगुणं गयाणं समयाहियावलिय (का प्रतौ 'समयाहियावलिया', ता ता प्रतौ 'समयाहियावलिया (य) इति पाठः। ') सुहुमसांपराइयचरिमसमयअपत्ताणं (प्रत्योरुभयोरेव 'समयअप्पमत्ताणं' इति पाठः।) च जहाकमेण वेयणीय-मोहणीयमंतोमुहुत्तकालपमाणउदीरणुवलंभादो। उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं, अप्पमत्त-उवसंतकसाएसु हेट्ठा पदिदूण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं परिभमिय जहाकमेण सग-सगगुणं गंतूण उदीरणावोच्छेदे कदे उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलमेत्तकालुवलंभादो।

एक जीवकी अपेक्षा काल -- वेदनीय और मोहनीयका उदीरक जीव अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित होता है। जो सादि-सपर्यवसित है वह जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त काल तक उदीरणा करता है। इसका कारण यह है कि अप्रमत्त और उपशान्तकषाय गुणस्थानसे नीचे गिरकर और सर्वजघन्य अन्तर्मुहूर्त काल तक वहाँ रहकर फिरसे अप्रमत्त गुणस्थानको प्राप्त हुए जीवोंके, तथा एक समय अधिक आवली स्वरूप सूक्ष्मसाम्परायिकके अन्त समयको न प्राप्त हुए अर्थात् सूक्ष्मसाम्परायिकके कालमें एक समय अधिक आवलीके अवशिष्ट रहनेके पूर्व समयवर्ती जीवोंके, यथाक्रमसे वेदनीय और मोहनीय कर्मकी अन्तर्मुहूर्त कालप्रमाण उदीरणा पायी जाती है। उत्कर्षसे दोनों कर्मोंकी उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन काल तक उदीरणा करता है, क्योंकि, अप्रमत्त और उपशान्तकषाय गुणस्थानोंसे नीचे गिरकर व उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन काल तक परिभ्रमण करके यथाक्रमसे अपने अपने गुणस्थानको प्राप्त होकर वहाँ उदीरणाकी व्युच्छित्ति करने पर उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण काल पाया जाता है।

आउअस्स जहण्णएण एगो वा दो वा समया। अप्पमत्तो पमत्तो होदूण जहण्णेण एगसमयं चेव आउअस्स उदीरओ होदूण बिदियसमए आउअस्स अणुदीरओ होदि। उदयावलियमेत्तट्ठिदिविसेसो त्ति जे आइरिया भणंति तेसिमहिप्पाएण उदीरणकालो जहण्णओ

एगसमयमेत्तो। जे पुण दोण्णिसमए जहण्णेण उदीरदे त्ति भणंति तेसिमहिप्पाएण बे समया त्ति परूविदं। उक्कसेण तेत्तीसं सागरोवमाणि आवलियूणाणि। कुदो? उदयावलियब्भंतरे पविट्ठट्ठिदीणं उदीरणाभावादो। सेसाणं कम्माणमणादिओ अपज्जवसिदो। खवगसेडिमणारुहणसहावाणमेस भंगो। अणादिओ सपज्जवसिदो, खवगसेडिमारुहिय विणासिदउदीरणाणमेसेव भंगो। एवं कालो समत्तो।

आयु कर्मकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक अथवा दो समय है। कारण कि अप्रमत्त जीव प्रमत्त हो जघन्यसे एक समय ही आयुका उदीरक होकर द्वितीय समयमें आयुका अनुदीरक होता है। जो आचार्य उदयावली मात्र स्थितिविशेषकी प्ररूपणा करते हैं उनके अभिप्राय से काल जघन्य से एक समय मात्र होता है। किन्तु जो आचार्य 'जघन्यसे दो समय उदीरणा करता है' ऐसा कहते हैं उनके अभिप्रायसे दो समय मात्र जघन्य कालकी प्ररूपणा की गयी है। आयु का उदीरणाकाल उत्कर्षसे एक आवली हीन तैंतीस सागरोपम प्रमाण है, क्योंकि उदयावलीके भीतर प्रविष्ट स्थितियोंकी उदीरणा सम्भव नहीं है। शेष कर्मोंका उदीरक अनादि-पर्यवसित जीव होता है। यह भंग क्षपकश्रेणिपर न चढ़नेवाले जीवोंके सम्भव है। तथा इन्हीं शेष कर्मोंका उदीरक अनादि-सपर्यवसित जीव भी होता है। किन्तु क्षपकश्रेणिपर चढ़कर उदीरणाको नष्ट करनेवालोंके यही भंग होता है। इस प्रकार काल समाप्त हुआ।

एगजीवेण अंतरेण पयदं -- वेयणीय-मोहणीय उदीरणाणमंतरं जहण्णेण एगो समओ। कुदो? अप्पमत्त-आवलियसेससुहुमउवसामयगुणेसु एगसमयमच्छिय बिदियसमए मदाणं तदुवलंभादो। उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। कुदो? अप्पमत्तगुणमुवसंतकसायगुणं च पडिवज्जिय सव्वुकस्समंतोमुहुत्तमच्छिय पमत्तगुणे सकसायगुणे च पडिवण्णे (ता प्रतौ 'पमत्तगुणे च पडिवण्णे' इति पाठः।) तदुवलंभादो। आउअस्स उदीरणंतरं जहण्णेण आवलिया। कुदो? सव्वेसु भवेसु आवलियमेत्तसेसेसु आउअस्स उदीरणाभावादो। उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। कुदो? अप्पमत्तादिउवरिमगुणट्ठाणेसु सव्वुकस्समंतोमुहुत्तमच्छिय पुणो पमत्तगुणं पडिवण्णस्स तदुवलंभादो। सेसाणं कम्माणं णत्थि अंतरं, खीणकसायगुणट्ठाणम्हि उदीरणाए णट्ठाए पुणो उदीरणाऽपादुब्भावादो (ता प्रतौ 'पादुब्भावा(भावा-- दो' इति पाठः।) । एवमंतरं समत्तं।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तर प्रकृत है -- वेदनीय और मोहनीयकी उदीरणा का अन्तरकाल जघन्यसे एक समय है, क्योंकि अप्रमत्त और आवली प्रमाण शेष सूक्ष्मसाम्पराय उपशामक इन दोनों गुणस्थानोंमें क्रमसे एक समय रहकर द्वितीय समयमें मरणको प्राप्त हुए जीवोंके उक्त अन्तरकाल पाया जाता है। उत्कर्षसे वह अंतर्मुहूर्त प्रमाण है, क्योंकि, अप्रमत्त गुणस्थान और उपशांतकषाय गुणस्थानको प्राप्त होकर वहाँ सर्वोत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त काल तक रहकर प्रमत्त गुणस्थान और सकषाय (सूक्ष्मसांपराय) गुणस्थानको प्राप्त होनेपर वह पाया जाता है। आयुकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे आवली काल प्रमाण है, क्योंकि, सब भवोंके आवली मात्र शेष रहनेपर आयुकी उदीरणाका अभाव होता है। उत्कर्षसे वह अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है, क्योंकि, अप्रमत्तादिक उपरिम गुणस्थानोंमें सर्वोत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त काल तक रहकर पश्चात् प्रमत्त गुणस्थानको प्राप्त हुए जीवके वह पाया जाता है। शेष पाँच कर्मोंकी उदीरणाका अन्तर नहीं है, क्योंकि, क्षीणकषाय गुणस्थान (बारहवें और तेरहवें)में उदीरणाके नष्ट होनेपर फिर उदीरणाका प्रादुर्भाव नहीं है। इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ।

णाणाजीवेहि भंगविचए अट्ठपदं -- जे जं पयडिं वेदंति तेसु पयदं, अवेदएसु अव्ववहारादो। एदेण अट्ठपदेण आउअ-वेयणीयाणं जीवा णियमा उदीरया अणुदीरया च। सेसाणं कम्माणं सव्वे जीवा णियमा उदीरया, सिया उदीरया च अणुदीरओ च, सिया उदीरया च अणुदीरया च। एवं णाणाविएहि भंगविचओ समत्तो।

नाना जीवकी अपेक्षा भंग विचयमें अर्थपद -- जो जिस प्रकृतिका वेदन करते हैं वे यहाँ प्रकृत हैं, क्योंकि, अवेदकोंमें उसका व्यवहार नहीं है। इस अर्थपदमें आयु और वेदनीय कर्मोंके जीव नियमसे उदीरक हैं और अनुदीरक भी हैं। शेष कर्मोंके सब जीव नियमसे उदीरक, कदाचित् बहुत उदीरक व एक अनुदीरक, तथा कदाचित् बहुत उदीरक व बहुत अनुदीरक होते हैं। इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ।

णाणाजीवेहि कालो -- सव्वेसिं कम्माणं उदीरणा केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धा। एवं कालो समत्तो।

नाना जीवों की अपेक्षा काल -- सब कर्मोंकी उदीरणा कितने काल तक होती है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा होती है। इस प्रकार काल समाप्त हुआ।

अंतरं णत्थि। अप्पाबहुअं पयदं। आउअस्स उदीरया थोवा। वेयणीयस्स उदीरया विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? चरिमावलियाए (का प्रतौ 'चरिमावलिये', ता प्रतौ 'चरिमावलिय' इति पाठः।) संचिदअणंतजीवमेत्तेण। मोहणीयस्स उदीरया विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? अप्पमत्त-अपुव्व-अणियट्ठिसुहुमसांपराइयजीवमेत्तेण। णाणावरण-दंसणावरण-अंतराइयाणमुदीरणा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? उवसंत-खीणकसायमेत्तेण। णामा-गोदाणमुदीरया विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? सजोगिकेवलिमेत्तेण।

नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं है। अल्पबहुत्व प्रकृत है -- आयु कर्मके उदीरक स्तोक हैं। वेदनीयके उदीरक विशेष अधिक हैं। कितने मात्रसे अधिक हैं? अंतिम आवलीमें संचित अनन्त जीवोंके प्रमाणसे अधिक हैं। मोहनीय कर्मके उदीरक विशेष अधिक हैं। कितने मात्रसे अधिक हैं? अप्रमत्त, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्मसाम्परायिक जीवोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं। ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तरायके उदीरक विशेष अधिक हैं। कितने मात्रसे अधिक है? उपशान्तकषाय और क्षीणकषाय जीवोंके प्रमाणसे अधिक हैं। नाम व गोत्रके उदीरक विशेष अधिक हैं। कितने मात्रसे अधिक हैं? सयोगकेवलियोंके प्रमाणसे अधिक हैं।

णिरयगईए णेरइएसु सव्वेसिं पि कम्माणमुदीरया तुल्ला, णिरंतरं तत्थ मरंताणमभावादो। कदाचि आउअस्स उदीरया थोवा, सेसकम्माणं सरिसा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? चरमावलियाए संचिदजीवमेत्तेण। एवं सव्वासिं गदीणं वत्तव्वं। णवरि तिरक्खेसु सरिसा त्ति ण वत्तव्वं। मणुस्सेसु ओघं। एवमप्पाबहुअं समत्तं।

नरकगतिमें नारकियोंमें सभी कर्मोंके उदीरक तुल्य हैं, क्योंकि, वहाँ निरन्तर मरनेवाले जीवोंका अभाव है। कदाचित् वहाँ आयु कर्मके उदीरक स्तोक हैं और शेष कर्मोंके उदीरक समान होकर आयु कर्मके उदीरकोंकी अपेक्षा विशेष अधिक होते हैं। कितने मात्रसे विशेष अधिक होते हैं? अन्तिम आवलीके संचित जीवोंके प्रमाणसे वे विशेष अधिक होते हैं। 'सदृश होते हैं' ऐसा नहीं कहना चाहिए। मनुष्योंकी प्ररूपणा ओघके समान है। इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

भुजगारो पदणिक्खेवो वड्ढीउदीरणा च णत्थि, एगेगपयडिअधियाराओ। एवमेगेगपयडिउदीरणा समत्ता।

भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिउदीरणा नहीं है, क्योंकि, यहाँ एक एक प्रकृतिका अधिकार है। इस प्रकार एक-एकप्रकृतिउदीरणा समाप्त हुई।

संपहि पयडिट्ठाणसमुक्कित्तणं कस्सामो। अट्ठविह-सत्तविह-छव्विह-पंचविह-दुविह-उदीरणा त्ति पंचपयडिट्ठाणाणि उदीरणाए होंति। तं जहा -- सव्वाओ पयडीओ उदीरंतस्स अट्ठविहउदीरणा होंति। आउएण विणा सत्तविहउदीरणा होइ। आउअवेयणीएहि विणा अप्पमत्तादिसु छव्विहउदीरणा होदि। मोहाउअ-वेयणीयकम्मेहि विणा खीणकसायम्हि उवसंतकसाए च पंचविहउदीरणा होदि। णाणावरण-दंसणावरण-वेयणीय-मोहाउअ-अंतराइएहि विणा सजोगकेवलिम्हि दोण्णमुदीरणा होदि। एवं ट्ठाणसमुक्कित्तणा समत्ता।

अब प्रकृतिस्थानोंका समुत्कीर्तन करते हैं -- आठ कर्मोंकी, सात कर्मोंकी, छह कर्मोंकी, पाँच कर्मोंकी और दो कर्मोंकी उदीरणा इस प्रकार उदीरणाके पाँच प्रकृतिस्थान हैं। यथा -- सब प्रकृतियोंकी उदीरणा करनेवालेके आठ प्रकृतिक उदीरणा होती है। आयुके विना सात प्रकृतिक उदीरणा होती है। आयु और वेदनीयके विना अप्रमत्त आदि गुणस्थानों में छह प्रकृतिक उदीरणा होती है। मोहनीय, आयु और वेदनीय कर्मोंके विना क्षीणकषाय और उपशांतकषाय गुणस्थानोंमें पाँच प्रकृतिक उदीरणा होती है। ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय, आयु और अंतरायके विना सयोगकेवली गुणस्थानमें दो प्रकृतिक उदीरणा होती है। इस प्रकार स्थान समुत्कीर्तना समाप्त हुई।

सामित्तं -- अट्ठण्णमुदीरओ को होदि? अण्णदरो पमत्तो, जस्स आउअं ण होदि उदयावलियपविट्ठं। सत्तण्णमुदीरओ को होदि? अण्णदरो पमत्तो, जस्स आउअं उदयावलियं पविट्ठं। छण्णमुदीरओ को होदि? अप्पमत्तो सकसाओ। पंचण्णमुदीरओ को होदि? छदुमत्थो वीयराओ आवलियचरिमसमयस्स हेट्ठा। दोण्णमुदीरओ को होदि? उप्पण्णणाण-दंसणहरो सजोगिकेवली (घाईणं चदुमत्था उदीरगा रागिणो य मोहस्स। तइयाऊण पमत्ता जोगंता उ त्ति दोण्हं च।। क. प्र. ४-४)। एवं सामित्तं समत्तं।

स्वामित्व -- आठ कर्मोंका उदीरक कौन होता है? उनका उदीरक अन्यतर प्रमत्त जीव होता है, जिसका आयु कर्म उदयावलीमें प्रविष्ट नहीं है। सात कर्मोंका उदीरक कौन होता है? अन्यतर प्रमत्त जीव उनका उदीरक होता है, जिसका आयु कर्म उदयावलीमें प्रविष्ट है। छह का

उदीरक कौन होता है? अप्रमत्त सकषाय जीव उनका उदीरक होता है। पाँच का उदीरक कौन होता है? उनका उदीरक छद्मस्थ वीतराग जीव होता है, मात्र वह क्षीणमोहके काल में एक आवलीके चरम समय शेष रहने के पूर्व उनकी उदीरणा करता है। दोका उदीरक कौन होता है? उत्पन्न हुए ज्ञान व दर्शनका धारक सयोगकेवली उनका उदीरक होता है। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ।

एयजीवेण कालो -- अट्ठण्णमुदीरओ जहण्णेण एक्कं व दो समए, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि आवलियूणाणि। सत्तण्णमुदीरओ जहण्णेण एक्कं व दो व समए, पमत्ते उदयावलियपविट्ठआउए बिदियसमए तदियसमए वा अप्पमत्तगुणं गदे वेयणीयउदीरणाए णट्ठाए एग-दोसमयसत्तउदीरणाकालुवलंभादो। उक्कस्सेण आवलिया। छण्णमुदीरओ जहण्णेण एक्कं व दो (का प्रतौ 'एवं दो', ता प्रतौ 'एवं (गं) दो' इति पाठः।) व समए उदीरेदि, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। पंचण्णमुदीरओ जहण्णेण एक्कं व दो व समए उदीरेदि, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। दोण्णमुदीरगो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा। एवं कालो समत्तो।

एक जीवकी अपेक्षा काल -- आठ कर्मोंका उदीरक जघन्यसे एक व दो समय तथा उत्कर्षसे आवली कम तैंतीस सागरोपम काल तक होता है। सात कर्मोंका उदीरक जघन्यसे एक व दो समय होता है, क्योंकि, प्रमत्तगुणस्थानवर्ती जीवके आयु कर्मके उदयावलीमें प्रविष्ट होनपर जब वह द्वितीय समयमें अथवा तृतीय समयमें अप्रमत्त गुणस्थानको प्राप्त होता है तब चूँकि वेदनीयकी उदीरणा नष्ट हो जाती है, अतः उसके एक या दो समय प्रमाण सात की उदीरणाका काल पाया जाता है। (तात्पर्य यह है कि जिस प्रमत्तसंयतके आयुकर्म उदयावलीमें प्रविष्ट हो गया उसके सात कर्मकी उदीरणा होती है। किन्तु उसके एक समय बाद या दो समय बाद अप्रमत्त संयत गुणस्थानको प्राप्त हो जानेपर प्रमत्तसंयतके सात कर्मकी उदीरणाका जघन्य काल एक या दो समय देखा जाता है।) सातकी उदीरणाका काल उत्कर्षसे आवली प्रमाण है। छहका उदीरक जघन्यसे एक व दो समय उनकी उदीरणा करता है, उत्कर्षसे अंतर्मुहूर्त काल तक उदीरणा करना रहता है। पाँच का उदीरक जघन्य से एक व दो समय उनकी उदीरणा करता है, उत्कर्ष से अन्तर्मुहूर्त काल तक उनकी उदीरणा करता है। दोका उदीरक जघन्यसे

अन्तर्मुहूर्त व उत्कर्षसे कुछ कम पूर्व कोटि काल तक उनकी उदीरणा करता है। इस प्रकार काल समाप्त हुआ।

एगजीवेण अंतरं -- अट्ठण्णमुदीरणंतरं जहण्णेण (ता प्रतौ 'अट्ठण्णमुदीरणंतरं, जहण्णेण' इति पाठः।) एगावलिया, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। सत्तण्णमुदीरणंतरं जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणमावलियूणं, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि आवलियूणाणि। छण्णमुदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। एवं पंचण्णमुदीरयाणं पि अंतरं वत्तवं। दोण्णमुदीरयाणं णत्थि अंतरं। कुदो? अंतरिदे पुणो दोण्णमुदीरणाए पादुब्भावाभावादो (का प्रतौ 'पादुब्भावादो' इति पाठः।) । एवमंतरं समत्तं।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तर -- आठ कर्मोकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्यसे एक आवली व उत्कर्ष से अंतर्मुहूर्त प्रमाण है। सातकी उदीरणाका अन्तर जघन्यतः आवलीसे हीन क्षुद्रभवग्रहण व उत्कर्षसे आवली कम तैंतीस सागरोपम प्रमाण है। छहकी उदीरणाका अंतर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्‌गलपरिवर्तन प्रमाण है। इसी प्रकार पाँच कर्मोके उदीरकोंका भी अन्तर कहना चाहिये। दोके उदीरकोंका अन्तर नहीं होता, क्योंकि, अन्तरको प्राप्त होने पर फिर दोकी उदीरणाके प्रादुर्भावका अभाव है। इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ।

णाणाजीवेहि भंगविचओ -- जे जं पयडिट्ठाणमुदीरेंति तेसु पयदं। अट्ठण्णं सत्तण्णं छण्णं दोण्णं ट्ठाणाणं णियमा सव्वे जीवा उदीरया। सिया एदे च पंचविहउदीरओ च, सिया एदे च पंचविहउदीरया च। एवं णाणाजीवेहि भंगविचओ समत्तो।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय -- जो जीव जिस प्रकृतिस्थानकी उदीरणा करते हैं वे प्रकृत हैं। आठ, सात, छह और दो प्रकृतिक स्थानोंके नियमसे सब जीव उदीरक होते हैं। कदाचित् ये नाना जीव उदीरक होते हैं और पाँचका एक जीव उदीरक होता है। कदाचित् ये नाना जीव उदीरक होते हैं और पाँचके भी नाना जीव उदीरक होते हैं। इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ।

णाणाजीवेहि कालो -- पंचण्णमुदीरयाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। सेसाणमुदीरयाणं सव्वद्धा। एवं कालो समत्तो।

नाना जीवोंकी अपेक्षा काल -- पाँच कर्मोंके उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अंतर्मुहूर्त प्रमाण है। शेष कर्मोंके उदीरकोंका काल सर्वदा है। इस प्रकार काल समाप्त हुआ।

अंतरं पचण्णमुदीरयाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छम्मासा। सेसाणं णत्थि अंतरं। एवमंतरं समत्तं।

अन्तर -- पाँच कर्मोंके उदीरकोंका अंतर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास है। शेष कर्मोंके उदीरकोंका अंतर नहीं है। इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ।

अप्पाबहुअं -- पंचण्णमुदीरया थोवा। दोण्णमुदीरया संखेज्जगुणा। छण्णमुदीरया संखेज्जगुणा। सत्तण्णमुदीरया अणंतगुणा। अट्ठण्णमुदीरया संखेज्जगुणा। कुदो? एगावलियसंचिदसत्तण्हमुदीरएहिंतो संखेज्जावलियसंचित अट्ठण्णमुदीरयाणं संखेज्जगुणत्तुवलंभादो। एवमप्पाबहुअं समत्तं।

अल्पबहुत्व -- पाँचके उदीरक जीव स्तोक हैं। दोके उदीरक संख्यातगुणे हैं। छहके उदीरक संख्यातगुणे हैं। सातके उदीरक अनंतगुणे हैं। आठके उदीरक संख्यातगुणे हैं, क्योंकि, एक आवलीमें संचित सातके उदीरकोंसे संख्यात आवलियोंमें संचित हुए आठके उदीरक संख्यातगुणे पाये जाते हैं। इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

भुजगारे अट्ठपदं -- जाओ एण्हिं पयडीओ उदीरेदि तत्तो अणंतरओसक्काविदे समए अप्पदरियाओ उदीरेदि त्ति एसो भुजगारो। अणंतरविदिक्कंतसमए बहुदरियाओ उदीरेदि त्ति एसा अप्पदरउदीरणा। दोसु वि समएसु तत्तियाओ चेव पयडिओ उदीरेंतस्स (ता प्रतौ 'उदीरंतस्स' इति पाठः।) अवट्ठिदउदीरणा। अणुदीरणाओ उदीरेंतस्स (ता प्रतौ 'उदीरंतस्स' इति पाठः।) अवत्तव्वउदीरणा (प्रत्योरुभयोरेव 'अवत्तव्वउदीरणा' इति पाठः।)। एदेण अट्ठपदेण उवरिमअहियारा वत्तव्वा।

भुजाकारके विषयमे अर्थपद -- इस समय जितनी प्रकृतियोंकी उदीरणा करता है उससे अनन्तर पिछले समयमें उनसे थोड़ी प्रकृतियोंकी उदीरणा करता है, यह भुजाकार उदीरणा है। इस समय जितनी प्रकृतियोंकी उदीरणा करता है उनसे अनंतर बीते हुए समयमें बहुतर प्रकृतियोंकी उदीरणा करता है, यह अल्पतर उदीरणा है। दोनों ही समयोंमें उतनी मात्र प्रकृतियोंकी ही उदीरणा करनेवालेके अवस्थित उदीरणा होती है। अनुदीरणासे उदीरणा

करनेवालेके अवक्तव्य उदीरणा होती है। इस अर्थपदके अनुसार आगेके अधिकारोंका कथन करना चाहिए।

सामित्तं -- भुजगारउदीरओ, अप्पउदीरओ अवट्ठिदउदीरओ च को होदि? अण्णदरो मिच्छाइट्ठी सम्माइट्ठी वा। अवत्तव्वउदीरया (ता प्रतौ 'अवट्ठिद (अवत्तव्व) उदीरया' इति पाठः।) णत्थि। एवं सामित्तं समत्तं (ता प्रतौ 'समत्तं' इत्येतत् पदं नोपलभ्यते।) ।

स्वामित्व -- भुजाकार उदीरक, अल्पतर उदीरक और अवस्थित उदीरक कौन होता है? अन्यतर मिथ्यादृष्टि अथवा सम्यग्दृष्टि जीव उनका उदीरक होता है। अवक्तव्य उदीरक नहीं हैं। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ।

एयजीवेण कालो -- भुजगार-अप्पदरउदीरयाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे समया। तं जहा -- उवसंतकसाए सुहुमसांपराइए जादे छ उदीरेंतस्स एगो भुजगारसमओ। पुणो बिदियसमए कालं कादूण देवसुप्पण्णस्स पढमसमए अट्ठ उदीरेंतस्स बिदिओ भुजगारसमओ। एवं भुजगारस्स बे समया। पमत्तसंजदचरिमसमए आउए उदयावलियं पविट्ठे सत्त उदीरेंतस्स एगो अप्पदरसमओ। तदो बिदियसमए अप्पमत्तगुणे पडिवण्णे वेदणीएण विणा छ उदीरेंतस्स बिदिओ अप्पदरसमओ। एवमप्पदरउदीरणाए वि उक्कस्सेण बे चेव समया। अवट्ठिदउदीरणाए कालो (का प्रतौ 'काले' इति पाठः।) जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि समयाहियाए आवलियाए ऊणाणि, देवेसुप्पण्णपढमसमओ मरणावलिया च। एवं भुजगारकालो समत्तो।

एक जीवकी अपेक्षा काल -- भुजाकार और अल्पतर उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय प्रमाण है। वह इस प्रकार से -- उपशान्तकषाय जीवके सूक्ष्मसाम्परायिक होकर छह प्रकृतियोंकी उदीरणा करनेपर भुजाकार उदीरणाका एक समय प्राप्त होता है। पश्चात् द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त होकर देवोंमें उत्पन्न हुए उक्त जीवके प्रथम समयमें आठ कर्मोंकी उदीरणा करनेपर भुजाकार उदीरणाका द्वितीय समय प्राप्त होता है। इस प्रकार भुजाकार उदीरणाका उत्कृष्ट काल दो समय है। प्रमत्तसंयत गुणस्थानके अंतिम समयमें आयुके समयावलिमें प्रविष्ट होनेपर सात कर्मोंकी उदीरणा करनेवालेके अल्पतर उदीरणाका एक समय काल होता है। पश्चात् द्वितीय समयमें अप्रमत्त गुणस्थान को प्राप्त होनेपर वेदनीयके विना छहकी उदीरणा करनेवालेके अल्पतर उदीरणाका द्वितीय समय पाया

जाता है। इस प्रकार अल्पतर उदीरणाके भी उत्कर्षसे दो ही समय हैं। अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय अधिक आवलीसे हीन तैंतीस सागरोपम प्रमाण है। यहाँ एक समय और एक आवलीसे देवोंमें उत्पन्न होनेका प्रथम समय और मरणावली ली गयी है। इस प्रकार काल समाप्त हुआ।

भुजगारउदीरणाए अंतरं जहण्णेण एक्को वा दो वा समया। कुदो? पंचविहउदीरओ उवसंतकसाओ हेट्ठा ओदरिय सुहुमसांपराइओ होदूण छव्विहउदीरओ जादो, बिदियसमए भुजगारउदीरणा अवट्ठिदउदीरणाए अंतरिदा, तदियसमए कालं कादूण देवेसुप्पज्जिय अट्ठ उदीरयमाणो भुजगारं गदो, एवमेगसमयअंतरदंसणादो। उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि समऊणाणि। तं जहा -- तेत्तीससागरोवमेसु उप्पण्णपढमसमए भुजगारं कादूण समऊणतेत्तीससागरोवमाणि अवट्ठिद-अप्पदरउदीरणाए अंतरिय मणुस्सेसु उप्पण्णपढमसमए कयभुजगारस्स समऊणतेत्तीसं सागरोवमाणि उक्कस्सभुजगारंतरं होदि। एवमप्पदरउदीरणाए वि वत्तव्वं। कुदो? आवलियकालेण देवेसुप्पज्जिहिदि त्ति पुव्वं चेव अप्पदरं काऊण अंतरिय देवेसुप्पज्जिय आवलियूणतेत्तीससागरोवमाणि गमिय अप्पदरे कदे तदुवलंभादो। अधवा अप्पदरस्स उक्कस्सं अंतरं (का प्रतौ 'अप्पदरस्स उक्कस्सं अंतरिय', ता प्रतौ 'अप्प० उक्कस्सं अंतरं' इति पाठः।) तेत्तीससागरोवमाणि अंतोमुहुत्तेण सादिरेयाणि। अवट्ठिदउदीरणाए जहण्णेण अंतरमेगसमओ, उक्कस्सेण बे समया। एवं भुजगारंतरं समत्तं।

भुजाकार उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक व दो समय है, क्योंकि, पाँच कर्मोंका उदीरक उपशान्तकषाय जीव नीचे उतरकर सूक्ष्मसाम्परायिक होकर छह कर्मोंका उदीरक हुआ, द्वितीय समयमें भुजाकार उदीरणा अवस्थित उदीरणासे अन्तरको प्राप्त हुई, तृतीय समयमें मृत्युको प्राप्त होकर देवोंमें उत्पन्न हो आठ कर्मोंकी उदीरणा करता हुआ भुजाकार उदीरणाको प्राप्त हुआ, इस प्रकार भुजाकार उदीरणाका एक समय अन्तर देखा जाता है। उत्कर्षसे एक समय कम तैंतीस सागरोपम प्रमाण अन्तर होता है। वह इस प्रकारसे -- तैंतीस सागरोपम प्रमाण आयुवालोंमें उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें भुजाकार उदीरणाको करके एक समय कम तैंतीस सागरोपम तक अवस्थित या अल्पतर उदीरणासे अन्तरको प्राप्त हो मनुष्योंमें उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें भुजाकार उदीरणाको करनेपर एक समय कम तैंतीस सागरोपम प्रमाण भुजाकार

उदीरणाका उत्कृष्ट अन्तर होता है। इसी प्रकार अल्पतर उदीरणाके विषयमें भी कहना चाहिए, क्योकि, आवली प्रमाण कालके बाद देवोंमें उत्पन्न होगा, इस प्रकार पूर्वमें ही अल्पतर उदीरणा करके अन्तरको प्राप्त हो देवोंमें उत्पन्न होकर आवलीसे कम तैंतीस सागरोपमोंको बिताकर अल्पतर उदीरणा करनेपर उक्त अंतर पाया जाता है। अथवा, अल्पतर उदीरणाका उत्कृष्ट अन्तर अंतर्मुहूर्तसे अधिक तैंतीस सागरोपम प्रमाण है। अवस्थित उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय है। इस प्रकार भुजाकार उदीरणाका अन्तर समाप्त हुआ।

णाणाजीवेहि [(का प्रतौ 'णाणाजीवेण' इति पाठः।)] भंगविचओ। वेदएसु पयदं -- भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदउदीरया णियमा अत्थि, अवत्तव्वं णत्थि। एवमोघो समत्तो।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय। वेदक प्रकृत हैं -- भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरक नियमसे हैं, अवक्तव्य उदीरक नहीं हैं। इस प्रकार ओघ समाप्त हुआ।

सेसासु गदीसु जाणिदूण वत्तव्वं। एवं णाणाजीवेहि भंगविचओ समत्तो।

शेष गति आदिकोंके विषयमें जानकर कथन करना चाहिए। इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ।

भागाभागो, परिमाणं, खेत्तं, पोसणं, कालो, अंतरं, भावो च जाणिदूण णेदव्वो। अप्पाबहुअं-भुजगारउदीरया थोवा। अप्पदरउदीरया विसेसाहिया। केत्तियमेत्तो विसेसो? संखेज्जमाणुसजीवमेत्तो। अवट्ठिदउदीरया [(का प्रतौ 'उदीरणा' इति पाठः।)] असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? असंखेज्जा समया। एवं माणुसगदीए वि अप्पाबहुअं वत्तव्वं। सेसासु गदीसु भुजगारअप्पदरउदीरया तुल्ला थोवा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। एवमप्पाबहुअं समत्तं।

भागाभाग, परिमाण, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर और भावको जानकर ले जाना चाहिए।

अल्पबहुत्व -- भुजाकार उदीरक स्तोक हैं। अल्पतर उदीरक विशेष अधिक हैं।

शंका -- विशेष कितना है?

समाधान -- वह संख्यात मनुष्य जीवोंके बराबर है।

अल्पतर उदीरकोंसे अवस्थित उदीरक असंख्यात गुणे हैं। गुणकार क्या है? गुणकार असंख्यात समय है। इसी प्रकार मनुष्य गतिमें भी अल्पबहुत्व कहना चाहिए। शेष गतियोंमें भुजाकार और अल्पतर उदीरक समान होकर स्तोक हैं। अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं। इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

पदणिक्खेवो -- उक्कस्सिया वड्ढी कस्स? जो पंचविहउदीरओ उवसंतकसाओ मदो, तस्स पढमसमयदेवस्स अट्ठ उदीरयमाणस्स उक्कस्सिया वड्ढी। एदस्स चेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं। उक्कस्सिया हाणी कस्स? जो अट्ठणमुदीरगो पमत्तो अप्पमत्तो जादो तस्स उक्कस्सिया हाणी। पंचउदीरएण दोसु उदीरिदासु उक्कस्सहाणी किण्ण परूविदा? ण, बहुपयडीहिंतो बहुहाणीए इहग्गहणादो। अधवा एसो वि संभवो एत्थ संगहेयव्वो।

पदनिक्षेप -- उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? पाँचका उदीरक जो उपशांतकषाय जीव मृत्युको प्राप्त हुआ है, उसके देव होनेके प्रथम समयमें आठ की उदीरणा करनेपर उत्कृष्ट बुद्धि होती है। इसीके अनन्तर समयमें उत्कृष्ट अवस्थान होता है। उत्कृष्ट हानि किसके होती है? जो आठका उदीरक प्रमत्त जीव अप्रमत्त हुआ है उसके उत्कृष्ट हानि होती है।

शंका -- पाँचके उदीरक जीवके द्वारा दोकी उदीरणा करनेपर उसके उत्कृष्ट हानि की प्ररूपणा क्यों नहीं की गयी?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, यहाँ बहुत प्रकृतियोंसे बहुत हानिको ग्रहण किया गया है। अथवा यह विकल्प चूँकि संभव है, अतः उसका भी यहाँ संग्रह करना चाहिए।

हाणी थोवा, वड्ढी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि। एवमोघो समत्तो।

हानि स्तोक है तथा वृद्धि व अवस्थान दोनों ही समान होकर उससे विशेष अधिक हैं। इस प्रकार ओघ समाप्त हुआ।

सेसासु गदीसु वड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि तिण्णि वि तुल्लाणि। एवं पदणिक्खेवो समत्तो।

मनुष्यगतिके सिवा शेष गतियोंमें वृद्धि, हानि व अवस्थान तीनों ही समान हैं। इस प्रकार पदनिक्षेप समाप्त हुआ।

एत्तो वड्ढिउदीरणा -- संखेज्जभागवड्ढी संखेज्जभागहाणि संखेज्जगुणहाणी अवट्ठिदउदीरणा चेदि एत्थ चत्तारि चेव पदाणि होंति। सेसं जाणिऊण वत्तव्वं।

आगे वृद्धिउदीरणाका कथन करते हैं -- संख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागहानि, संख्यातगुणहानि और अवस्थितउदीरणा, ये चार ही पद यहाँ होते हैं। शेष कथन जानकर करना चाहिए।